ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)-८४८१२५

बुलेटिन संख्या-१०२
दिनांक-शुक्रवार,२७ दिसम्बर,२०१६

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः १७.० एवं ६.४ डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता ९२ प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में ६६ प्रतिशत, हवा की औसत गति ५.८ कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण १.६ मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन १.५ घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा ५ से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में ११.२ एवं दोपहर में १७.५ डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा तथा सुबह में कुहासा देखा गया।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(२८-३१ दिसम्बर,२०१६)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी २८-३१ दिसम्बर,२०१६ तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः-

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के बादल छाये रह सकते है। इस अवधि में मौसम शुष्क रहने का अनुमान है।
- इस अवधि में ठंड का प्रकोप बरकरार रह सकता है। पश्चिमी विक्षोभ तथा सर्द पछिया हवा के चलने के कारण अगले २-३ दिनों तक कोल्ड-डे/शीतलहर की संभावना बनी रहने का अनुमान है। अधिकतम तापमान १४ से १६ डिग्री सेल्सियस तथा न्यूनतम तापमान में २ से ३ डिग्री सेल्सियस गिरावट के साथ यह ४ से ५ डिग्री सेल्सियस के आसपास रह सकती है। रात्री एवं सुबह में मध्यम से घने कुहासे छा सकते है।
- इस दौरान औसतन ५ से ७ कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से अगले ३ दिनों तक पछिया तथा उसके बाद पूरवा हवा चलने की संभावना है। जिसके कारण बादलों के बनने का अनुमान है। २ जनवरी के आसपास हल्की वर्षा या बूंदाबूदी की संभावना बन रही है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में ९० से ९५ प्रतिशत तथा दोपहर में ६५ से ७० प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- बिलम्ब से बोयी गयी गेहूँ की फसल जो २१ से २५ दिनों की हों गयी हो ३० किलो नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन करें। गेहूँ की बुआई के ३० से ३५ दिनों के बाद की अवस्था जिसमें (पहली सिंचाई के बाद) गेहूँ की फसल में कई प्रकार के खर-पतवार उग आते है। इन खरपतवारों का विकास काफी तेजी से होता है और ये गेहूँ की बढ़वार को प्रभावित करती है। जिससे उपज प्रभावित होता है। इन सभी प्रकार के खरपतवारों के नियंत्रन हेतु सल्फोसल्फयुरॉन ३३ ग्राम प्रति हेक्टर एवं मेटसल्फयुरॉन २० ग्राम प्रति हेक्टर दवा ५०० लीटर पानी में मिलाकर खड़ी फसल में पर छिड़काव करें।
- खड़ी रबी फसलों जैसे-आलू, गाजर, मटर, टमाटर, धनियाँ, लहसून में कृषक भाई झुलसा रोग की निगरानी करें। बदलीनुमा मौसम तथा वतावरण में नमी होने पर यह बीमारी फसलों में काफी तेजी से फैलती है। इस रोग में फसलों की पत्तियों के किनारे व सिरे से झुलसना प्रारंभ होती है जिसके कारण पूरा पौधा झुलस जाता है। इस रोग के लक्षण दिखने पर २.५ ग्राम डाई-इथेन एम० ४५ फफूँदनाशक दवा का प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना कर समान रुप से फसल पर २-३ छिड़काव १० दिनों के अन्तराल पर करें।
- मक्का की फसल में तना बेधक कीट की निगरानी करें। इसकी सूंडिया कोमल पत्तियों को खाती है तथा मध्य कलिका की पत्तियों के बीच घुसकर तने में पहुँच जाती है। तने के गुद्दे को खाती हुई जड़ की तरफ बढ़ती हुई सुरंग बनाती है। जिससे मध्य कलिका मुरझायी नजर आती है जो बाद में सुख जाती है। एक ही पौधे में कई सूंडिया मिलकर पौधें को खाती है। इस प्रकार फसल को यह काफी नुकसान पहुचाती है। उपचार हेतु फसल में अंकुरण के दो सप्ताह बाद फोरेट १० जी० या कार्बोफ्यूरान ३ जी० का ७-८ दाना प्रति गाभा दें। अधिक नुकसान होने पर डेल्टामिथ्रिन २५०-३०० मि०ली० प्रति हे० की दर से छिड़काव करें। नवम्बर माह के शुरु में बोयी गई मक्का की फसल जो ५० से ६० दिनों की अवस्था में है। इन फसलों में ५० किलोग्राम नेत्रजन उर्वरक का व्यवहार कर मिट्टी चढ़ावें।
- आलू की फसल में कटवर्म या कजरा पिल्लू की निगराणी करें। यह कीट आलू में काफी हानी पहुचाता है। फसल की शुरुआती अवस्था में यह कीट रात्री बेला में जमीन की सतह से पौधे को काट डालता है। फसल के बाद की अवस्था में यह पौधे की शाखाओं एवं पत्तियों को काटता है। कंद बनने की अवस्था में यह कंद को खाता है। इस कीट का प्रकोप फसल में दिखनें पर बचाव के लिए क्लोरपायरीफॉस २० ई०सी० दवा का २.५ से ३ मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से से घोल बनाकर छिड़काव करें। आलू की फसल से खरपतवार निकालें।
- मटर में फली छेदक कीट की निगराणी करें। इस कीट के पिल्लू फलियों में जालीनूमा आवरण बनाकर उसके नीचे फलियों में प्रवेश कर अन्दर ही अन्दर मटर के दानो को खाती रहती हैं। एक पिल्लू एक से अधिक फलियों को नष्ट करता है। अक्रान्त फलियॉ खाने योग्य नही रह जाती, जिससे उपज में अत्यधिक कमी आती है। कीट प्रबन्धन हेतु प्रकाश फंदा का उपयोग करें। १५-२० टी आकार का पंछी वैठका (वर्ड पर्चर) प्रति हेक्टर लगावे। अधिक नुकसान होने पर क्वीनालफास २५ ई० सी० या नोवाल्युरॉन १० ई० सी० का १ मि० ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करें। मटर की फसल में अच्छे फलन के लिए २ प्रतिशत यूरिया के घोल का छिड़काव करें।
- बैगन की फसल को तना एवं फल छेदक कीट से बचाव हेतु ग्रसित तना एवं फलो को इकठा कर नष्ट कर दें, यदि कीट की संख्या अधिक हो तो स्पिनोसेड ४८ ई०सी०@ १ मि०ली० प्रति ४ ली० पानी की दर से छिड़काव करे।
- तापमान में लगातार गिरावट के कारण दुधारु पशुओं दूधारु पशुओं के रख-रखाव पर विशेष घ्यान दें।

आज का अधिकतम तापमानः १४.५ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से ८.७ डिग्री कम	आज का न्यूनतम तापमानः ६.२ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से २.४ डिग्री कम

(डॉ० ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकार